NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत की सीमावर्ती अवसंरचना संबंधी कमियों में सुधार करना

www.nextias.com

भारत की सीमावर्ती अवसंरचना संबंधी कमियों में सुधार करना

संदर्भ

- अरुणाचल प्रदेश में सीमावर्ती अवसंरचना परियोजनाओं को हाल ही में मिली स्वीकृतियों तथा विदेश मंत्री द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में बढ़ती गतिविधियों के संबंध में दिए गए वक्तव्य ने चीन के विरुद्ध भारत की अवसंरचनात्मक तैयारियों को लेकर चिंताएँ पुनः बढ़ा दी हैं।

भारत-चीन सीमा पर आधुनिक अवसंरचना की आवश्यकता

- भारत और चीन के बीच लगभग 3,488 किलोमीटर लंबी विवादित सीमा है, जहाँ वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) का दोनों देशों द्वारा पारस्परिक रूप से सीमांकन नहीं किया गया है। इस कारण अवसंरचना का विकास राष्ट्रीय सुरक्षा और क्षेत्रीय दावों से निकटता से जुड़ा हुआ है।
- आधुनिक सीमावर्ती अवसंरचना निम्नलिखित कारणों से आवश्यक है:
  - **सैन्य तैयारी:** सड़कें, सुरंगें, रेलवे और हवाई पट्टियाँ सैनिकों की तीव्र तैनाती, सैन्य उपकरणों की आवाजाही तथा आपातकालीन सैन्य सहायता को संभव बनाती हैं।
  - **आपूर्ति व्यवस्था की सुदृढ़ता:** सभी मौसमों में संपर्क सुविधा भोजन, ईंधन, गोला-बारूद और चिकित्सा सहायता की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करती है।
  - **क्षेत्रीय सुरक्षा:** स्थायी बस्तियाँ और नियमित प्रशासनिक उपस्थिति दूरस्थ सीमावर्ती क्षेत्रों के प्रभावी प्रबंधन में भारत की क्षमता को सुदृढ़ करती हैं।
  - **सामाजिक-आर्थिक विकास:** संपर्क सुविधाओं से आजीविका, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा और पर्यटन को बढ़ावा मिलता है तथा सीमावर्ती गाँवों से पलायन हतोत्साहित होता है।
  - **आपदा प्रबंधन:** विश्वसनीय परिवहन और संचार नेटवर्क भूस्खलन, हिमस्खलन तथा अन्य हिमालयी आपदाओं के प्रति त्वरित प्रतिक्रिया को बेहतर बनाते हैं।

भारत और चीन के बीच अवसंरचनात्मक अंतर को समझना

- **चीन का दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टिकोण:** चीन ने राजमार्गों, रेलवे, हवाई पट्टियों, संचार प्रणालियों और शियाओकांग (मध्यम समृद्धि वाली) सीमावर्ती बस्तियों का व्यापक नेटवर्क विकसित किया है। इस बढ़त के पीछे दो प्रमुख कारक हैं:
  - **दीर्घकालिक निवेश:** चीन की 14वीं पंचवर्षीय योजना (2021–2025) में तिब्बत में प्रमुख परियोजनाओं के लिए 600 अरब युआन से अधिक के निवेश की परिकल्पना की गई थी, हालाँकि ये सभी परियोजनाएँ विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों से संबंधित नहीं थीं।
  - **कानूनी समर्थन:** चीन का भूमि सीमा कानून जनवरी 2022 से प्रभावी हुआ। यह सीमा रक्षा, अवसंरचना विकास और बस्तियों के निर्माण के लिए वैधानिक ढाँचा प्रदान करता है।
  - ये दोनों उपाय सैन्य रसद को सुदृढ़ करने तथा स्थायी उपस्थिति के माध्यम से चीन के क्षेत्रीय दावों को मजबूत बनाने में सहायक हैं।

- **भारत की सुधरती, किंतु असमान प्रतिक्रिया:** भारत ने वर्ष 2017 के डोकलाम गतिरोध और वर्ष 2020 की गलवान घाटी की सैन्य संघर्षों के बाद सीमावर्ती अवसंरचना के विकास की गति तीव्र की।
- हालाँकि, चीन की एकीकृत योजना के विपरीत भारत का दृष्टिकोण ऐतिहासिक रूप से खंडित रहा है, जिसमें विभिन्न मंत्रालयों, सुरक्षा एजेंसियों और राज्य सरकारों की भागीदारी शामिल है।
- अवसंरचनात्मक अंतर केवल सड़कों की लंबाई तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें संपर्क सुविधा, परिचालन विश्वसनीयता और पूरे वर्ष सैन्य तैनाती बनाए रखने की क्षमता भी शामिल है।

प्रमुख बाधाएँ एवं चुनौतियाँ: रसद और भौगोलिक परिस्थितियाँ

- **कठिन हिमालयी भूभाग:** अत्यधिक ऊँचाई, अस्थिर ढलानें, भूकंप, भूस्खलन, भारी हिमपात और निर्माण के लिए सीमित मौसम परियोजनाओं की लागत बढ़ाते हैं तथा उनमें विलंब का कारण बनते हैं।
- **प्रशासनिक विखंडन:** रक्षा, गृह और रेल मंत्रालयों, राज्य सरकारों तथा पर्यावरण संबंधी प्राधिकरणों के बीच समन्वय की कमी के कारण स्वीकृति और क्रियान्वयन की प्रक्रिया प्रायः धीमी हो जाती है।
- **सीमित रणनीतिक रेल संपर्क:** प्रस्तावित 489 किलोमीटर लंबी बिलासपुर–मनाली–लेह रेल परियोजना में लगभग 270 किलोमीटर सुरंगें शामिल हैं। इसकी विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (DPR) तैयार है, किंतु निर्माण संबंधी स्वीकृति अभी लंबित है।
- **रसद संबंधी सीमाएँ:** सड़क परिवहन पर निर्भरता प्रतिकूल मौसम के दौरान संवेदनशीलता बढ़ाती है। हवाई परिवहन लचीलापन प्रदान करता है, किंतु उच्च क्षमता वाले सतही परिवहन नेटवर्क का विकल्प नहीं हो सकता।
- **अंतिम छोर तक विकास का अभाव:** विद्युत, दूरसंचार, स्वास्थ्य सेवाओं और आजीविका के अपर्याप्त अवसरों के कारण सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थायी नागरिक जनसंख्या बनाए रखना कठिन हो जाता है।

भारत की हालिया सीमावर्ती अवसंरचना संबंधी पहलें

- **सीमावर्ती सड़कों में निवेश में वृद्धि:** सीमा सड़क संगठन (BRO) ने वर्ष 2024–25 में 16,690 करोड़ रुपये व्यय किए। इसका पूँजीगत बजट आवंटन वर्ष 2025–26 के 7,146.50 करोड़ रुपये से बढ़ाकर वर्ष 2026–27 में 7,394 करोड़ रुपये कर दिया गया।
- **रणनीतिक सड़क एवं सुरंग परियोजनाएँ:**
  - **अटल सुरंग और सेला सुरंग:** क्रमशः लद्दाख और तवांग की ओर संपर्क सुविधा को बेहतर बनाती हैं।
  - **जोजिला और शिंकुन ला सुरंगें:** लद्दाख तक वर्षभर संपर्क सुविधा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विकसित की जा रही हैं।
  - **अरुणाचल सीमावर्ती राजमार्ग (NH-913):** हाल ही में लगभग 44,000 करोड़ रुपये की लागत से करीब 1,500 किलोमीटर लंबे इस राजमार्ग को स्वीकृति दी गई है। इसके अंतर्गत 266 किलोमीटर लंबाई वाले आठ खंडों पर कार्य प्रारंभ किया गया है।
- **नई सीमावर्ती सड़कें एवं पुल:** हालिया रिपोर्टों के अनुसार, भारत-चीन सीमा सड़क (ICBR) चरण-III के अंतर्गत 26 सड़कों को स्वीकृति दी गई है तथा भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP) ने अरुणाचल प्रदेश में 33 पुलों को स्वीकृति दी है। हालाँकि, सड़क कार्यक्रम का विवरण अभी तक सार्वजनिक रूप से औपचारिक रूप से घोषित नहीं किया गया है।

- **जीवंत ग्राम कार्यक्रम (VVP), 2023:** इसका उद्देश्य बेहतर संपर्क सुविधाओं, सार्वजनिक सेवाओं और आजीविका के अवसरों के माध्यम से भारत की उत्तरी सीमाओं पर स्थित गाँवों का विकास करना है।
  - अरुणाचल प्रदेश सरकार के अनुसार, 455 सीमावर्ती गाँवों को शामिल करते हुए कुल 2,414 परियोजनाओं में से 1,099 परियोजनाएँ पूरी की जा चुकी हैं।

आगे की राह: सुदृढ़ सीमावर्ती क्षेत्र का निर्माण

- **एकीकृत शासन व्यवस्था स्थापित करना:** वैधानिक समन्वय शक्तियों और सुनिश्चित बहुवर्षीय वित्तपोषण के साथ सीमावर्ती अवसंरचना विकास प्राधिकरण के गठन पर विचार किया जाना चाहिए।
- **साक्ष्य-आधारित योजना अपनाना:** विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क, रसद, संचार और परिचालन तैयारियों की कमियों की पहचान के लिए एक समग्र सीमावर्ती अवसंरचना सूचकांक विकसित किया जाना चाहिए।
- **संस्थागत भागीदारी का विस्तार:** सीमा सड़क संगठन को रणनीतिक अग्रिम संपर्क सुविधाओं को प्राथमिकता देनी चाहिए, जबकि भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI), राष्ट्रीय राजमार्ग एवं अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड (NHIDCL) तथा सक्षम निजी कंपनियों को सहायक परिवहन नेटवर्क सुदृढ़ करना चाहिए।
- **तकनीकी क्षमता में सुधार:** स्वतंत्र गुणवत्ता परीक्षणों के सहयोग से उपग्रह निगरानी, भू-स्थानिक मानचित्रण, उन्नत सुरंग निर्माण तकनीकों और जलवायु-अनुकूल अभियांत्रिकी का उपयोग किया जाना चाहिए।
- **आबाद सीमावर्ती गाँवों को सुदृढ़ बनाना:** स्थानीय समुदायों को विकास प्रक्रिया में शामिल करते हुए विश्वसनीय विद्युत, ब्रॉडबैंड, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा और सतत आजीविका के अवसर सुनिश्चित किए जाने चाहिए।
- **पारिस्थितिक सुरक्षा उपायों को मजबूत करना:** अवसंरचना विस्तार में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, ढलानों का स्थिरीकरण और आपदा-रोधी निर्माण को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

- भारत को संकट के समय तात्कालिक निर्माण की प्रवृत्ति से आगे बढ़कर दीर्घकालिक और एकीकृत सीमावर्ती विकास की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता है।
- सुरक्षित सीमाओं के लिए केवल सैन्य अवसंरचना ही नहीं, बल्कि सुदृढ़ रसद व्यवस्था, प्रभावी संस्थानों और समृद्ध सीमावर्ती समुदायों की भी आवश्यकता है।
- इस प्रकार का दृष्टिकोण राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ-साथ समावेशी क्षेत्रीय विकास को भी सुदृढ़ कर सकता है।

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: सीमावर्ती अवसंरचना केवल सैन्य आवागमन को सुगम बनाने का साधन नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय सुरक्षा एवं विकास का भी एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भारत-चीन सीमा पर अवसंरचना के विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों का परीक्षण कीजिए।

स्रोत: TH

■■■■